MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

April To June 2021
Issue-38, Vol-04

01

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

अतिथि संपादाक :

१. शिवशेट्टे गोविंद

२. डॉ. राठोड अनिल

३. डॉ. भगवान कदम

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
14 April, 2021

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.940 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

66) हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना
डॉ.संतोष गिरहे, नागपुर (महाराष्ट्र) ||247

67) हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का बदलता परिदृश्य
शीशराम मीणा, उदयपुर ||251

68) चुनौतियों के तहखाने में आदिवासी समाज ('जंगल पहाड़ के पाठ' के विशेष ...
डॉ. प्रिया ए., कोट्टयम, केरल ||254

69) भारतीय संविधान में आदिवासी जनजाति के संदर्भ मे प्रावधान
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे, जि. लातूर ||257

70) आदिवासी साहित्य उद्गम और विकास
प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव, जि. नाशिक ||259

71) हिंदी कथा साहित्य में चित्रित आदिवासियों की जीवन शैली
प्रा. गणेश दुंदा गभाले, ता.जि. सातारा, (महाराष्ट्र) ||261

72) भूमंडलीकरण के बढते प्रभाव का विश्लेषण :ग्लोबल गाँव के देवता
डॉ.भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे, सातारा ||265

73) दिनकर की दृष्टि में भारतीय संस्कृति की पुरोधा आदिम जनजातियाँ
तरुण पालीवाल, उदयपुर, राजस्थान ||269

74) आदिवासियों का वन संघर्ष
डॉ॰ नीतू परिहार, उदयपुर ||272

75) 'धरती आबा' नाटक में आदिवासी विमर्श
प्रा. पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत, पनवेल ||275

76) आदिवासी समाज की मुकव्यथा के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानी ...और ...
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे, जि नांदेड़, महाराष्ट्र ||278

77) आदिवासी कहानियों में अस्मिता संघर्ष
डॉ.सचिन सदाशिव शिंगाडे ||282

78) जंगल जहाँ शुरू होता है में व्यक्त आदिवासी जीवन का आर्थिक संघर्ष
प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार, जि. बीड, महाराष्ट्र ||286

79) हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर ||289

http://www.vidyawarta.com/03 www.printingarea.blogspot.com

79

हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

****

आदिवासी समाज सदियों से अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबुर है। विकास की मुख्यधारा से कटिहुई जमाप्त आदिवासियों की है। उनका संपुर्ण जीवन त्रासदी, दुख, तिरस्कार, अपमान, घृणा और शोषण से भरा होता है। आर्थिक, समाजिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों से अनादीवर्शो से दुर्लक्षित रहे है। आदिवासी भौतिक सुखसाधनों कि उपलब्धता तो बहुत दूर की कौडी हैं। दो वक्त की रोटी, सर पर छप्पर पहननेके लिए अच्छे कपडे तक आदिवासीयों के पास नहिं होते है। शिक्षा एवं आरोग्य सुविधा से दूर्लक्षित होने के कारन, इनका जीवन अत्यंत हिन एवं दिन होता है। उदरनिर्वाह के संसाधन अत्यंत अल्प होने के कारन संपुर्ण जीवन अभाव में बिताना पडता है। अनेको विकशतियाँ, विसंगतियाँ एवं विडंबनाए जीवन के हर रास्ते पर काँटो की तरह बिखरे होते हैं। अधिकतर अदिवासी जन जातियाँ घुमक्कडी के कारन अस्थिर होती हैं। उनका भविश्य तों गहरा अधकारमय होता है।आदिवासी स्त्रीयों का जीवन तों अनेको समस्याओं का पुलिंदा है। आदिवासी और स्त्री होने की दोहरी विचित्र एवं विकृत मानसिकता से आहत होती है। स्त्रीयों का जीवन तो अत्यंत विक्षिप्त और शोषित होता हैं। सरकार, प्रशासन, पुँजीपती, जमीनदार, तथाकथित उच्च वर्ग के लोग और आदिवासी पुरूश सभी उनका शोषण करते हैं। उन्हे अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए सदैव मौके की ताक में रहते हैं आदिवासि स्त्रीयों का उपभोग करना वे अपना अधिकार समजते हैं। सामाजिक व्यवस्था के ठेकेदार उनकी मजबुरियों का फायदा उठाकर उनका शरीर एवं जमीनों को भोगना चाहते हैं। आदिवासी स्त्रीयां अनपढ होने के कारन, अंधश्रद्धा, शोषित परंपरा, कुठित रीति रिवाजों को मानना अपना परम कर्तव्य मानती हैं। परिनाम स्वरूप वह दुख की अधिकारीनी हो जाती हैं। स्त्रीयोंको उनका अभावग्रस्त, अपमानित, घृणित, एवं तिरस्कृत जीवन अपने कर्मो के परिनाम स्वरूप हि प्राप्त हुआ हैं ऐसी उनकी धारना होती हैं। आदिवासी जनजातियों की अनेको परंपरा यह स्त्री षोशण को बढावा देनेवाली होती है। अनेको जनजातियों में एक स्त्री कों अनेको पुरूशों के साथ संबंध रखने की परंपरा होने के कारन स्त्री जीवन अंधकार मय, अस्थिर एवं घृणित होता हैं। अपने और अपने परिवार के पेट की आग मिंटाने के लिए वह अपने षरीर तक का सौदा कर देती हैं। इससे विचित्र बात और क्या हो सकती हैं। आदिवासी स्त्री जीवन की समस्यावों को वाणी प्रदान करने का कार्य आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यास कारों ने प्रभावी रूप से किया है। आदिवासी जनजातियों का सर्वागिन चित्रण हिंदी उपन्यासों में किया गया हैं। आदिवासी समाज कि सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, षैक्षिक एवं धार्मिक परिस्थिती और उन परिस्थितीयों में व्याप्तविकृतियों एवं विडंबनाओं को प्रखरता से उघाडा हैं। आदिवासी स्त्री जीवन की सर्वागिन वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करने का कार्य हिन्दी उपन्यास कारों ने बडी ईमानदारीसे किया हैं।

आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यासों में स्त्री जीवन की त्रासदि, पुंजीपती एवं तथाकथित उच्च वर्ग द्वारा होने वाला मानसिक, षारिरिक व आर्थिक षोशन, राजनीति का षिकार होता आदिवासी समाज, प्रषासन द्वारा षोशित, अपमानित आदिवासी समाज । उनकी अंधश्रद्धा, रहन—सहन, वेशभुशा, खान—पान, भाशा पैली, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकमुहॉवरे, सभ्यता एवं संस्कृती आदि सभी का सर्वागिन चित्रण किया हैं। आदिवासी स्त्री किसप्रकार अभाव संत्रास, एवं पीडा में जीवनयापन करती हैं। पुरूशप्रधान वासनांध मानसिकता स्त्री किस प्रकार षिकार होती है इसका वास्तविक

चित्रण उपन्यासकार ने किया है। अन्न, वस्त्र, निवारा जैसे मुलभूत अवश्यकताओं के पुर्तता में भी अदिवासी समाज सक्षम नहीं है उनके बेबस और अभावग्रस्त जीवन को उपन्यासों में उघाडा गया है।

सुरज किरण की छॉव गोंड आदिवासी जीवन केंद्रीत उपन्यास है जिसमें बंजारी के जीवन त्रासदी एवं व्यथा को उजागर किया गया है। विलीयम–भोली भाली बंजारी को अपने प्रेमजाल में फॉसता है उसे अपनी वासना का षिकार बनाता हैं और उसे पडयंत्र से जाति से बहिश्कश्त कर देता है। बंजारीको बादमें जोसेफ प्रताडित और अपमानित करता हैं। और एक दिन होटल में बंजारी को कपुर को बेचकर चला जाता है। बेची हुई बंजारी पालित पषु की तरह जहॉ अपना मालिक बेचता हैं वहॉ रहती हैं।'जंगल के फुल' उपन्यास में अंग्रेज अधिकारी आदिवासी युवती महुआ को उपनी वासना का षिकार बनाना चाहता हैं। गोंड जाती का आदिवासी सरदार जिस लडकी की चाहे अपने साथ सुला सकता है उसका कोई विरोध नही कर सकता।

संजीव के 'धार' उपन्यास में बॉसगडा आदिवासी स्त्री मैना की त्रासदी को उजागर किया है। मैना के साथ जल मे पषु जैसा व्यवहार किया जाता हैं। जेलर मैना पर बलात्कार करता है परिनाम स्वरूप उसे बच्चा पैदा होता है। जिस कारण मैना को समाज और अपनी जाति की प्रताडना का षिकार होना पडता हैं। पति, पिता, बिरादारी, गुंडे, पूॅजीपती, आदि मैना का प्रताडित एवं अपमानित करते हैं। वीरेंद्र जैन के पार अपन्यास में राऊत आदिवासी स्त्रीयों को उच्च वर्ग के प्रपंच, छल एवं कपट का षिकार बनना पडता है। जमीदार, अफसर एवं अन्य प्रस्थापित वर्ग आदिवासी स्त्रीयों को जबरन खरिदते है और बेचते हैं। ''औरत एक ऐसी हाड मांस की वस्तुहैं। जिसे पलंग पर सुलाया भी जा सकता हैं। और जरूरत पडने पर जूती बनाकर पहना भी जा सकता है। समाज की तलहट जातियों के स्त्री–वर्ग की हालत तो और भी दर्दनाक हैं। एक अघोशित ग्राम वधू की पदवी निचली व मझीली जातियों की औरतों को दे दी जाती हैं। उनका अनाध उपभोग करना स्वर्ण अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है।''

मैत्रेय पुश्पा का अल्मा कबुतरी उपन्यास कबुतरा जाति की स्त्रीयों की पीडा एवं वेदना को उघाडता हैं। मषामाते धोखे से जंगलिया की हत्या कर कदमबाई को अपनी वासना का षिकार बनाता है। दुर्जन कुछ रूपए के लिए अल्मा को नारियों के व्यापारी सूरजभान को बेच देता है। अल्मा को संतोले भी मंत्री को खुष करने के लिए भेज देता है। अल्मा के मजबुरी के कारन वह अपना षरीर मंत्री को समर्पित कर देती है। इस तरह से आदिवासी स्त्रीयों की त्रासद, संत्रास, पीडा, संघर्श ओर अवमानना को अपन्यासों में उघाडा गया हैं।''[१]

कब तक पुकारूॅ यह रांगेय राघव का करनट आदिवासी जीवन पर आधिारित उपन्यास है। उपन्यास का कथानक राजस्थान और ब्रज के सीमाचंल पर आधारित है। समाज के मुख्य प्रवाह से कटी हुई करनट जाति विशम परिस्थिती में गुजर–बसर करती है। संघर्श, अपमान, घश्णा, तिरस्कार, मजबुरी, अभावपुर्ण जीवन वासनांध मानसिकता का पषुतुल्य प्रहार, जबरन एवं मजबुरन वैष्याव्यवसाय, बलात्कार आदि करनट आदिवासी स्त्रीयों के जीवन के पहलूओं को उपन्यास में उजागर किया है। करनट आदिवासी उपजिवीका के लिए खेल, तमाषे, नाचने – गाणे एवं षिकार पर निर्भर रहते है। डॉ रांगेय राघव ने उपन्यास के प्रारंभ में ही नट जाति की विषेशता के संबंध में लिखा है। ''नट कई तरह के होते है। इनमें करनट जरायम पेषा कहे जाते हैं। इनकी कोई नैतिकता नही होती। इनमें मर्द औरत को वेष्या बनाकर उसके द्वारा धन कमाते हैं। ज्यादातर ये लोग चोरी करते है और ढोल मढनां, हिरन की खाल बेचना इनका काम है। इनकी औरतें डोमनियों की तरह नाचती है। उंची जाती के लोग अक्सर डोमनियों से नाजायज ताल्लुक रखते है पर डोमनियॉ यह अपने पति को नहीं मालूम होने देती करनटों मे छूट है। वहॉ कोई बुराई 'सेक्स' के आधार पर नही मानी जाती।''[२]

डॉ रांगेय राघव नें प्यारो, धूपो चमारिन, कजरी, सूसन, चंदा, सोनो आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से करनट आदिवासी स्त्री जीवन की मजबुरी, त्रासदी, संत्रास,

पीडा, अभावग्रस्त और संघर्षमय जीवन को उजागर किया है। तिरस्कार, आर्थिक निर्बलता एवं परिवार सुरक्षा हेतु शरीर का समर्पण, जबरन एवं मजबुरण शरीर का व्यवसाय, रखेल बनने की असाहयता, वैष्या व्यवसाय से जुडे होने के कारन समाज की घृणित दृश्टि, उच्च वर्ग की कामेश्ठा दृश्टि, पुरूशों की वासनांधता के कारन बलात्कार का षिकार होना यह करनट आदिवासी स्त्रियों कें जीवन के दुखद अंग बन गए है। इन सभी पात्रो के माध्यम से रांगेय राघव ने आदिवासी स्त्रियों की दुर्दषा को उघाडा है।

दरोगा साहन प्यारी को जबरन हथिया लेता है, सुखराम बेचारा असहाय होकर प्यारी को छोडने को मजबुर हो जाता है। अंत में प्यारी रूस्मतखॉ की हवेली में रखेल बनकर रहने लगती है। रूस्मतखॉ की चापलूसी करने वाला बॉके विधवा धूपो चमारिन को अपनी वासना का षिकार बनाना चाहता है तो सुखराम इसका विरोध करता हैं। इस कारन बॉके सुखराम को अपने साथियों के द्वारा पिटाई करता है। और धूपों आत्महत्या कर लेती है। अंग्रेज अफसर की लडकी सूसन की डाकूओं से रक्षा करते है। और सूसन उन्हे अपने घर नौकरी दे देती है। इसी बीच एक अंग्रज युवक सूसन की लडकी चन्दा को ठाकुर बेरहमी से मारते–पीटते हैं। यह सारी घटनाएँ स्त्री के त्रासदी को उजागर करती हैं। प्यारी, चंदा, कजरी, सुसन और धूपो आदि स्त्री पात्रें के जीवन का करूण अंत स्त्री जीवन के त्रासदी का परिचायक हैं। करनट आदिवासी स्त्रियॉ मुक्त यौन संबंधो को मानती है। अनेको पुरूशों के साथ षारिरिक संबंध प्रस्थापित करने में कोई परहेज नही होता। कुछ के आदिवासी समाजों में नवयुवतियों को अपनी ही आदिवासी जाति में स्वच्छन्दता पूर्वक यौन संबंध प्रस्थापित करने की आजादी होती हैं। आदिवासी स्त्रियॉ मानती है की उनका काम हि है पुरूशों की षरीर की भुख मिटाना प्यारी एक जगह कहती हैं ''पुरूशों की षरीर की भुख मिटाना औरत का काम हि हैं। षरीर सुख में नैतिकता का कोई प्रष्न नही होता वह तो आवष्यकता होती है स्त्री और पुरूश की और औरत का काम काम होता है। अगर हमारा षरीर पुरूश को षारिरिक सुख नहीं दे सकता तो यह शरीर किस काम का है। डॉ. रांगेय राघव भूमिका में कहते है, वैसे तो नट समाज में केवल षारीरिक स्तर पर ही औरत का अस्तित्व माना जाता है, वह स्वच्छन्द यौनाचार को औरत का कार्य मानता हैं। कृकृकृकृ करनट आदिवासी नारियों में यौन संबंध सहज और स्वाभाविक समझा गया हैं।''[३]

सौनो प्यारी से कहती है — जानती है, सिपाई क्यों आया था? जानती हूँ। प्यारी ने कहा — दरोगा मुझे दिन में घूर रहा था। मरे की तबीयत आ गयी है। परंतु सुखराम तो न मानगा। नही मानेगा? अरी ये तो औरत के काम है। उसे बताने की जरूरत ही क्या है?''

'सो तो है, बह बूरा समझेगा न?'

'औरत का काम है। उसमें बुरा–भला क्या? कौन नहीं करती? नही तो मार–मार कर खाल उधेड देगा दरोगा और तेरे बाप और खसम दोनों को जेल भेज देगा। फिर भी पेट भरने को यही करना होगा?''[४]

आदिवासी स्त्रियों को प्रषासकीय अधिकारी किस प्रकार अपने वासना का षिकार बनाते है इसका वास्तविक चित्रण उपन्यास में किया है। पेट भरने के लिए और अपने परिवार की रक्षा करने के लिए स्त्रियों को अपना देह पुरूशों को समर्पित करना पडता हैं।

समाज का तथा–कथित उच्च वर्ग इनकी तरफ वासना और घश्णा की दश्टि से देखता हैं। करनट आदिवासी जाति को निम्न माना जाता है, ''करनट या नट जैसी जाति जो भारतीय जाति है और जहॉ नटनियों को मात्र मनोरंजन का ही नही रास्ते चलने वाले हर किसी उच्चवर्णीय युवक की कामेच्छा की बली बनना पडता है। इसका विरोध कोई नट भी नही कर सकता।''[५]

कमलाकर गंगावने लिखते है, करनटों मे नारी पति के होते हुए भी अनेक पर–पुरूशों से संबंध रखती है। नये संबंध स्थापित करने तथा पुराने तोंडने में वह स्वतंत्र रहती है। उनके ये संबंध षारिरिक भूख की तृप्ति हेतु एवं प्रजनन प्रक्रिया हेतु नही होते, अपितु पेट की आग बुझाने के लिए होते है। पेट भरने के लिए इस समाज की नारी किसी को भी चवन्नी– अठन्नी पर शरीर का क्रय–विक्रय करती है। वास्तव में पेट की

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
April To June 2021
Issue-38, Vol-04
0292

आग या समृध्द वर्ग का उत्पाडन इनकी अनैतिकता का कारण हो सकता है। ऐसा होते हुए भी इस समाज की नारी की मान्यता यह है कि नाता जोडना और बात है, मन की होकर रहना और बात है। करनट जमात को अपना पेट भरने के लिए अपने षरीर को भी दॉव पर लगाना पडता है। तथा समाज द्वारा उन्हे तिरस्कृत भी किया जाता है।

स्त्रीयों को अपने परिवार का पालन–पोशन करने के लिए देह को कौडीमोल बेचना पडता है। उच्च जातियों के लोगो की रखेल बनना पडता है। नारी जन्म पर दोशारोपन करते हुए प्यारी कहती है। ''ये दुनिया नरक है। हम गन्दे कीडे हैं। तूने यह संसार ऐसा क्यों बनाया है जहॉ आदमी कटता है तो इसके लिए दर्द तक नही होता। यहॉ पाप इतना बढ गया है कि गरिब और कमीना आदमी कोढी बनकर अपने पेट के लिए अपनी अच्छे देह को गंदा बना है। नट की छोरी पर जवानी आती है और गन्दे आदमी उसे बेइज्जत करते है फिर भी वह रंडी की तरह जिए जाती है। मर क्यों नही जाती। हम सब मर क्यों नही जाते।''[६] स्त्री जीवन की उदासीनता को प्यारी उजागर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.हिन्दी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास, प्रा. बी. के. कलासवा, पृ–२०६

२.कब तक पुकारूॅ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव

३.कब तक पुकारूॅ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव

४.कब तक पुकारूॅ (भूमिका) डॉ.रागेय राघव पृ. ४५

५.समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में जनचेतना, अरूना लोखंडे, पृ.१०४

६.हिन्दी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास, प्रा.बी.के.कलासवा, पृ. १०३

□□□

80

पॉव तले की दूब उपन्यास में आदिवासी विमर्श

डॉ. सुनील एम. पाटिल
आर. सी. पटेल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय शिरपुर, धुलिया

****

इक्कीसवीं सदी विमर्शो की सदी हैं स जैसे दलित, नारी, किन्नर, किसान, वृद्ध, बाल, मुस्लिम एवं आदिवासी आदि स आदिवासी विमर्श का अर्थ हैं —— ''आदिवासियों की परम्परागत छवि और पहचान से अलग एक नई पहचान एवं एक नई छवि का निर्माण करना।'' १ आदिवासी साहित्य मूल रुप से जनवादी साहित्य हैं स इसमें वेदना हैं तथा विद्रोह हैं स आदिवासी साहित्य के मुख्य स्रोत प्रकृति, संस्कृति और इतिहास हैं स प्रकृति, पेड, नदी, पर्वत, पशु–पक्षी एवं पौधे यह सब आदिवासी साहित्य में दिखाई देते हैं । साथ ही उनकी परम्परा, रीति–रिवाज, धार्मिक उत्सव, त्योहार और देवी — देवताओं आदि उनके लेखन साहित्य के अंग हैं । आदिवासियों के पास जमीन एवं जंगल न हो तो उस आदिवासियों की पहचान ही खत्म हो जाती हैं स सदियों से अर्थात आजादी के पूर्वकाल से यह आदिवासी अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा हैं स आदिवासियों की यही पहचान साहित्य की प्रत्येक विधा में दृष्टीगत होती हैं।

इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां अन्य शंताब्दियों की तुलना में बिलकुल अलग और नई हैं स उन्नासवीं सदी के अंतिम दो दशकों से हमारे देश में जो स्थितियां निर्माण हुई थी स इक्कीसवीं सदी के साहित्य में वह स्थितियां अत्यन्त प्रखरता से रुपायित हुई हैं । 'ग्लोबल व्हिलेज' की अवधारणा ने हमारा जो पश्चिमीकरण किया हैं । उसका चित्रण और प्रतिरोध साहित्य की प्रत्येक विधा में बडी गहराई से विवेचन किया हैं ।

Principal
A V Education Society's
Degloor College Degloor